11

𑇕𑇐𑇕𑇒

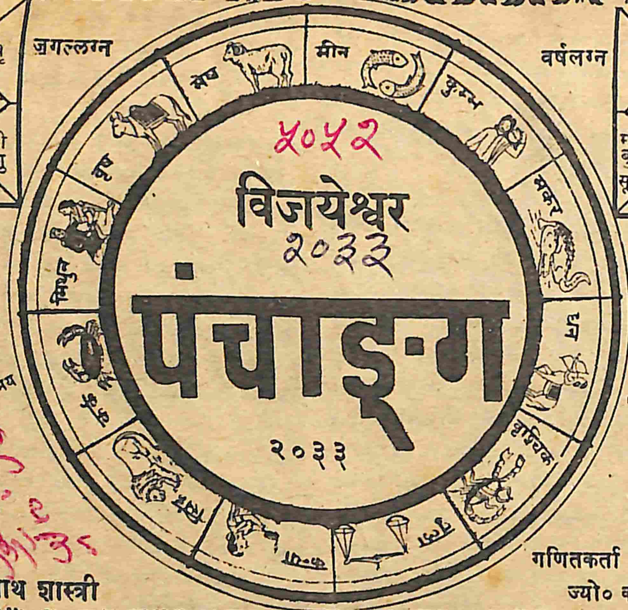
𑇒𑇐𑇓𑇓

𑇑𑇘𑇙𑇘

𑇑𑇙𑇗𑇖 - 𑇗𑇗

जगल्लग्न

वर्षलग्न



राजा = भौम

मन्त्री = भौम

असतो मा सद्गमय

तमसो मा ज्योतिर्गमय

सम्पादक :—

ज्योतिषी प्रेमनाथ शास्त्री

गणितकर्ता :—

ज्यो० कण्ठशर्मा (बिजबिहारा)

भविष्य वाणी

काश्मीर—भौम, बृहस्पति और शुक्र इस वर्ष काश्मीर के अनुकूल हैं, विशेषतया "वज़ीर एज़म" का पद ग्रहण करते समय मीन राशि का बृहस्पति और शुक्र लग्न में मकर राशि का भौम ११ वें भाव में ठहरा है, यह योग निश्चित रूप से काश्मीरजनता की खुशहाली का सूचक है, सरकार के प्रयत्न तथा प्रेरणा में काश्मीर हर दृष्टि से आगे बढ़ेगा।

भौम चूंकि भूमि का ही सन्तान है, इसलिये उपज को बढ़ाने की ओर, काशत की सीमा को विशाल तथा उपजाऊ बनाना, कृषिकों के लिये खेती बाड़ी के नये नये साधन सुलभ रखना की-मयाई खाद तथा नये बीजों का विभाजन सरकार का लक्ष्य होगा।

धान्य—धान्य के स्वामी बुध देवता जगल्लग्न से दसवें भाव में और आर्द्रा प्रवेश लग्न से पांचवें में है, ऐसे ही वर्ष लग्न से सूर्य के सम्पर्क में आकर शनि बुध को देख रहा है। इस योग के प्रभाव से धान्य की उपज सामूहिक रूप से सन्तोषजनक होगी। परन्तु पानी की कमी उत्पत्ति में कुछ बाधक होगी, काश्मीर के पूर्व तथा उत्तर भाग में धान्य की अधिकता होगी।

फल—फलों के स्वामी चन्द्रमा देवता पर लग्न से शनि और भौम दो क्रूरग्रहों की दृष्टि है, इस योग के अनुसार फलों की अधिकता होने पर भी फलों में दाग तथा बीमारी लगने की सम्भावना है, वर्ष के आरम्भ पर फलों का व्योपार बहुत ढीला रहेगा और व्योपारी वर्ग कुछ निराश दिखाई देगा परन्तु फलों के पकते ही फलों का व्योपार जाग उठेगा, और व्योपारी वर्ग हरकत में आयेगा।

धन—धन के स्वामी बृहस्पति भूमि, धन तथा सम्पत्ति की ना-बराबरी को साम्य—अवस्था पर लाने के लिए बीस-सूत्रीय प्रोग्राम को कार्य रूप में लाने के लिए सरकार कटिबद्ध रहेगी। स्मगलरों, टेक्सचोरों के लिए यह वर्ष घबराहट तथा बेचैनी का होगा, रिशवत सतानी चोरबाजारी पर कड़ी निगरानी से सरकार इस सामाजिक कलङ्क को दबाने में सफल रहेगी, मिथुन, कन्या, तुला, वृष, मकर, कुम्भराशि वालों को चेतावनी है कि वे काले धन को जहरीला बिच्छू समझ कर स्पर्श तक न करें, नहीं तो अन्त में पश्चाताप करना होगा, सयाहों का यातायात जोरों पर रहेगा, जो रियासत के व्योपार विशेषतया सैरगाहों के व्योपारियों को मालामाल करने में सहायक होगा।

वर्ष का नाम "शुक्ल" सवारी नौका आषाढ़ नवमीं सोमवार को वर्षा भगवती शराब बेचने वाली, इस मिले जुले योग के अनुसार तिजारत में वृद्धि, प्रोजक्टों का अमली रूप, यातायात के साधनों में वृद्धि, पशुधन की उन्नति की ओर प्रवृत्ति, खाद्य पदार्थों के मूल्यों में नियन्त्रण बीमारियों की रोकथाम, सड़कों स्कूलों, हस्पतालों पर असंख्य धन का खर्च, ऐसी ही सैंकड़ों जनसहायक योजनाओं को कार्य रूप में परिणत करने के लिये सरकार दत्तचित्त होगी।

सप्त ५०५२ चैत्र शुक्लपक्ष, मीन में सूर्य, बुध। मिथुन में भौम, मेष में गुरु, केतु। कु. में शुक्र।

राधं	चैत्र	मार्च	वार	नक्षत्र	घडी	पल	तिथि	घडी	पल	(ग्रह संचार बजे और मिंटों में) कर्क में शनि, तु. में राहु।
१४ ३१	१८	३०	भौम	उभा प्र	११	०	अं प्र	१०	५२	विचारनाग यात्रा। सिद्धः (थालबरुन)
२९	१९	३१	बुध	रेव प्र	१७	३०	प्र प्र	१६	१	७ बजे १ मिं शां से गंडांत, १ बजे ४२ मि. रात मेष में चन्द्र और ●
२६	२०	अप्रे	गुरु	अश्वि प्र	२३	३३	द्वि प्र	२०	५२	८-१८ प्रातः तक गंडांत। चन्द्रदर्शन। मानसम्।
२४	२१	२	शुक्र	भर प्र	२८	४८	तृ प्र	२५	१	शुक्रमास और शुक्रवर्ष आरम्भं। ९-५ रात मीन में शुक्र। मुद्गरम्
२१	२२	?	शनि	भर दि	०	१४	च प्र	२३	९	१२-४९ दिन वृष में चन्द्र। ध्वांक्षः। * मानसम्।
१८	२३	४	रवि	कृति दि	४	५०	पं प्र	२८	३६	दिन अधिक। धौम्यः। ● पंचक समाप्त। नवरेह। उन्मूलम्।
१६	२४	५	सोम	रोहि दि	८	२३	पं दि	१	३७	१-४८ दिन मेष में बुध। १०-६ रात मि. में चन्द्र।
१३	२५	६	भौम	मग दि	१०	२९	ष दि	२	२७	क्षयः। कुमार ६। प्रवर्धः
१०	२६	७	बुध	आद्र दि	११	४४	स दि	२	४	४-५३ रात कर्क में चन्द्र। ६ बजे १९ दिन बुध उदय। गजः।
८	२७	८	वीर	पून दि	११	३४	अ दि	०	२५	त्र्यहः। दुर्गाष्टमी, राम नवमी। उमाजयंती भ्रारी आंगन। शैलपुत्री *
५	२८	९	शुक्र	तिष्यं दि	१०	२६	द प्र	२२	२	३-४० रात से गंडांत। उन्मूलम् * जयंती बारामुल्ला। सिद्धः।
३	२९	१०	शनि	अश्ले दि	४	१०	ए प्र	१७	२७	९-२२ दिन सिंह में चन्द्र। ३-७ दिन तक गंडांत। कामदा ११
०	३०	११	रवि	मघा दि	५	१८	द्वा प्र	१२	६	मुद्गरम्। सौम्यः महावीर जयंती ध्वजः।
१३ ५७	३१	१२	सोम	पूफा दि	१	५०	त्रो प्र	६	२१	१२-२६ दिन कन्या में चन्द्र। १-८ दिन से मासांत
५५	वैशा	१३	भौम	हस्त प्र	२१	४४	चं प्र	०	२०	१-८ दिन मेष में सूर्य मुहूर्त ३० दरयाई। वैशाखी। संक्रांती व्रत
२	२	१४	बुध	चित्र प्र	१७	३२	पूं दि	२६	३२	२-४६ दिन तुला में चन्द्र। हनुमज्जयंती। कालदण्डः।

दक्षिण प्रान्त में काश्मीर के प्राचीन तीर्थों की → (१) रुद्र सन्ध्या (२) पवन सन्ध्या (३) त्रिसन्ध्या

जानकारी — इन तीर्थों के विषय में ऐसी कथा सुनने में आती है जब कि →

वि० २०३३ वैशाख कृष्णपक्ष, मेष में सूर्य, बुध, गु०, केतु । मि. में भौम । मीन में शुक्र । कर्क में शनि । तुला में राहु ।

राष्ट्रं	वैशा	अप्रे	वार	नक्षत्र	घडी	पल	तिथि	घडी	पल	(ग्रह संचार बजे और मिटों में)
५०	३	१५	वीर	स्वा. प्र	१३	३७	प्र दि	२०	४३	स्थिरः ।
४७	४	१६	शुक्र	विशा प्र	१०	८	द्वि दि	१५	१५	५-२२ शां वृश्चिक में चन्द्र । मातंगः । ☀ अस्त । ९-६ रात धनु ●
४४	५	१७	शनि	अनू. प्र	७	१६	तृ दि	१०	१६	संकट चतुर्थी । अमृतम् । ● में चन्द्र और मूल आरम्भ । कांडः ।
४२	६	१८	रवि	ज्ये. प्र	५	११	च दि	५	५७	११-१६ दिन से गंडांत २-५८ रात तक । १० बजे रात बृहस्पति ☀
३९	७	१९	सोम	मूल प्र	४	१	पं दि	२	३४	श्री पंचमी । ऋषिपीर श्राद्ध । कमला यात्रा त्राल । ८-४० रात ᗕ
३७	८	२०	भौम	पूषा प्र	३	५९	ष दि	०	७	२-४५ रात मकर में चन्द्र । त्रेताल षष्टी । त्र्यहः । मैत्रम् ।
३५	९	२१	बुध	उषा प्र	५	१०	स प्र	२६	४५	वज्रम् । ᗕ तक मूल । अलापकः ।
३३	१०	२२	गुरु	श्रव प्र	७	३७	न प्र	२७	६	दिन अधिक । ध्वजः ।
३१	११	२३	शुक्र	धनि प्र	११	१५	न दि	०	१२	१०-५१ दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ । प्रजापत्यः ।
२९	१२	२४	शनि	शत प्र	१६	४	द दि	२	४५	५-४६ दिन वृष में बुध । आनन्दः । ☞ सभा जम्मू । सिद्धः ।
२७	१३	२५	रवि	पूभा प्र	२१	४१	ए दि	६	२१	९-१२ रात मीन में चन्द्र । ५-९ रात मेष में शुक्र । चरः ।
२४	१४	२६	सोम	उभा प्र	२६	४८	द्वा दि	१०	५०	शैवाचार्य स्वामी लक्ष्मण जी जन्ममहोत्सव (निशात) मुसलम् ।
२२	१५	२७	भौम	उभा दि	१	४	त्रो दि	१५	४६	२-१४ रात से गंडांत । रुद्रराज भैरव यज्ञ रिहाड़ी कश्मीरी प०
२०	१६	२८	बुध	रेव दि	७	३४	चं दि	२०	५१	८-५२ प्रातः मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त । ३-३१ दिन तक ★
१८	१७	२९	गुरु	अश्वि दि	१३	५२	अं दि	२५	३८	वल्लभाचार्य जयन्ती । सूर्यग्रहण । मानसम् । ★ गंडांत । उन्मुलम् ।

पार्वती हिमालय में भगवान शंकर को पति के रूप में वरण करने के लिए तपस्या कर रही थी तो इन तीनों आश्रमों को तपस्या का स्थान बनाया गया, पवन सन्ध्या उन दिनों में उनकी तपस्या का स्थान था, जब पार्वती केवल पवन का ही सेवन करती थी, त्रिसन्ध्या में उनकी साधना सिद्ध हो चुकी थी और रुद्र सन्ध्या में भगवान शिव के साथ पार्वती का मिलाप हुआ था ।

वि० २०३३ वैशाख शुक्लपक्ष, मेष में सूर्य, बृहस्प. शुक्र, केतु। मि. में भौम, वृष में बुध, कर्क में शनि। तुला में राहु।

	राघं	वैशा	अप्रै	वार	नक्षत्र	घडी	पल	तिथि	घडी	पल	(ग्रह सचार बजे और मिंटों में)
१३	१६	१८	३०	शुक्र	भर दि	१९	३५	प्र दि	२९	४६	८-९ रात वृष में चन्द्र। ५-४३ दिन चन्द्र उदय। चन्द्रदर्शन। मुद्गरम्
	१४	१९	मई	शनि	कृति दि	२४	२५	द्वि दि	३२	५८	ध्वजः।
	१२	२०	२	रवि	रोहि दि	२८	१२	तृ प्र	१	२६	अक्षया ३। परशुराम जयंती। सूर्यमास। ५-३९ रात मिथुन में चन्द्र
	९	२१	३	सोम	मृग दि	३०	४९	च प्र	३	०	सूरदास जयंती। आनन्दः। ● प्रजापत्यः।
	७	२२	४	भौम	आर्द्र दि	३२	९	पं प्र	१	३६	शंकराचार्य जयंती। चरः।
	५	२३	५	बुध	पुन दि	३२	१५	ष दि	३३	३९	१२-४१ दिन कर्क में चन्द्र। कुमार षष्ठी। मुसलम्।
	३	२४	६	गुरु	तिष्य दि	३१	१४	स दि	३०	४६	१०-८ दिन कर्क में भौम। गंगाजयंती। शूलम्।
	०	२५	७	शुक्र	अश्ले दि	२९	१६	अ दि	२६	५७	११-३९ दिन से गंडांत ११-१० रात तक। ५-३५शां सिंह से चन्द्र
१२	५९	२६	८	शनि	मघा दि	२८	३०	न दि	२२	१९	काम्य.। मृत्युः।
	५७	२७	९	रवि	पूफा दि	२३	७	द दि	१७	३	८-३४ रात कन्या में चन्द्र। छत्रम् ग्रहण। बुध जयंती। स्थिरः।
	५५	२८	१०	सोम	उफा दि	१९	१९	ए दि	११	२०	नारद ११। डुमटबलयात्रा श्रीवत्सः।
	५३	२९	११	भौम	हस्त दि	१५	१७	द्वा दि	५	२०	१०-५७ रात तुला में चन्द्र। त्र्यहः। त्रौप्र ५-२४। सौम्यः।
	५०	३०	१२	बुध	चित्र दि	११	१४	चं प्र	१९	१०	गणेश चतुर्दशी, नरसिंह १४। कालदण्डः।
	४८	३१	१३	गुरु	स्वा. दि	७	२३	पू प्र	१३	२६	१-२९ रात वृश्चिक में चन्द्र। ११-१५ दिन से मासांत। चन्द्र

(१) पवन सन्ध्या: —यहां एक कुण्ड है जिसमें सालभर ती पानी नहीं होता परन्तु भाद्र कृष्ण पक्ष अमावस्या को जब "मघा" नक्षत्र हो तो यह कुण्ड अकस्मात् सुन्दर जल से भर जाता है और कुम्भक पूरक रेचक की भांति पानी का प्रवाह प्राणायाम करता जैसा दिखाई देता है, पानी कुण्ड से बाहर निकलता नहीं है, उसी कुण्ड से भगत जन पानी निकाल कर स्नान करके पुण्य के भागी बनते हैं, चूंकि इस यात्रा के लिए "मघा" नक्षत्र और अमावसी का होना आवश्यक है, इसलिये इस वर्ष २०३३ में भाद्र कृष्ण पक्ष

सप्त ५०५२ ज्येष्ठ कृष्णपक्ष, वृष में सूर्य, बुध। कर्क में भौम, शनि। मेष में गुरु, शुक्र, केतु।

राधं	ज्ये.	मई	वार	नक्षत्र	घडी	पल	तिथि	घडी	पल	(ग्रह संचार बजे और मिंटों में) तुला में राहु।
४६	१	१४	शुक्र	विशा दि	३	५१	प्र प्र	८	१६	११-१५ दिन वृष में सूर्य मुहूर्त ४५ किनारी। संक्रांतिव्रत। ९-३६ ●
४४	२	१५	शनि	अनू. दि	०	५४	द्वि प्र	३	५०	८-५७ रात से गंडांत। नारदजयंती। अमृतम्।
४२	३	१६	रवि	मूल प्र	२३	२१	तृ प्र	०	१५	१०-५३ प्रातः तक गंडांत। ६-२२ शां से शुक्रास्त। ५-४ प्रातः धनु ★
४०	४	१७	सोम	पूषा प्र	२२	२३	च दि	३२	२१	४-४६ प्रातः तक मूल। उन्मूलभ।
३८	५	१८	भौम	उषा प्र	२३	२२	पं दि	३१	०	१०-२५ दिन मकर में चन्द्र। जीठयंर यात्रा। मानसम्।
३६	६	१९	बुध	श्रव प्र	२५	१२	ष दि	३०	५५	छत्रम्। ★ में चन्द्र और मूल आरम्भ। संकट ४। सिद्धः।
३४	७	२०	वीर	श्रव दि	०	१९	स दि	३२	६	६-१७ शां कुम्भ चन्द्र और पंचक आरम्भ। ७-३७ दिन वृष में शुक्र ◐
३३	८	२१	शुक्र	धनि दि	३	४६	अ दि	३४	२८	प्रजापत्यः। ● दिन बृहस्पति उदय। मातंगः। ◐ ध्वजः।
३२	९	२२	शनि	शत दि	८	१८	न प्र	२	५८	४-२६ रात मीन में चन्द्र। आनन्दः।
३२	१०	२३	रवि	पूभा दि	१३	४६	द प्र	७	१३	चरः।
३१	११	२४	सोम	उभा दि	१९	५७	ए प्र	१२	४	रथा ११। भद्रकाली जयंती। मुसलम्।
३०	१२	२५	भौम	रेव दि	२६	२३	द्वा प्र	१७	३	९-२४ दिन से गंडांत १०-४२ रात तक। ४-३ दिन मेष में चन्द्र
२९	१३	२६	बुध	अश्वि दि	३२	४६	त्रो प्र	२१	५५	मृत्युः। और पंचक समाप्त। शूलम्।
२८	१४	२७	गुरु	भर प्र	३	३४	चं प्र	२४	५६	३-३० रात वृष में चन्द्र। दिन अधिक। काम्यः।
२७	१५	२८	शुक्र	कृति प	८	३८	चं दि	०	४६	५-४८ प्रातः चन्द्रास्त। छत्रम्। श्रीवत्सः।
२६	१६	२९	शनि	रोहि प्र	१२	३६	अं दि	३	५९	वटसावित्री, नन्दकेश्वर यात्रा सुरबल। हरिश्वर यात्रा खुनमुह

अमावस्या को ३ बजे ४८ मिनट दिन तक "मघा" नक्षत्र होने से इस महान तीर्थ के पर्व का लाभ उठायें यह तीर्थ वेरीनाग के नजदीक है और अनन्त नाग से "कपरन" जानी वाल ... में आप यात्रा करें। →

वि० २०३३ ज्येष्ठ शुक्लपक्ष, वृष में सूर्य, बुध, शुक्र। कर्क में भौम, शनि। मेष में गुरु, केतु।

राघं	ज्ये.	मई	वार	नक्षत्र	घडी	पल	तिथि	घडी	पल	(ग्रह संचार बजे और मिटों में) तुला में राहु।
२६	१७	३०	रवि	मृग प्र	१५	३२	प्र दि	५	५८	१-१० दिन मिथुन में चन्द्र। चन्द्र दर्शन। सौम्यः।
२५	१८	३१	सोम	आर्द्रा प्र	१७	२	द्वि दि	६	४४	कालदण्डः।
२४	१९	जून	भौम	पुन प्र	१७	२२	तृ दि	६	१५	८-२६ रात कर्क में चन्द्र। भौम मास। स्थिरः। ★ अमृतम्।
२३	२०	२	बुध	तिष्य प्र	१६	३१	च दि	४	३२	मातंगः।
२२	२१	३	गुरु	अश्ले प्र	१४	४५	पं दि	१	३९	त्र्यहः। १-२८ रात सिंह में चन्द्र। ७-३८शां से गंडांत। कुमार ६★
२१	२२	४	शुक्र	मघ प्र	१२	२३	स प्र	१७	५२	७-११ दिन तक गंडांत। काण्डः।
२०	२३	५	शनि	पूफा प्र	८	४५	अ प्र	१२	३६	४-४२ रात कन्या में चन्द्र। ज्येष्ठाष्टमी। अलापकः।
२०	२४	६	रवि	उफा प्र	४	५९	न प्र	६	४९	मैत्रम्।
१९	२५	७	सोम	हस्त प्र	०	५४	द प्र	१	१२	वज्रम्।
१८	२६	८	भौम	चित्र दि	३२	१०	ए दि	२९	५८	७-७ प्रातः तुला में चन्द्र। निर्जला एकादशी। ध्वांक्षः।
१७	२७	९	बुध	स्वा. दि	२८	१२	द्वा दि	२४	०	बुध द्वादशी। धौम्यः।
१६	२८	१०	गुरु	विशा दि	२४	३५	त्रो दि	१८	२०	९-३५ दिन वृश्चिक में चन्द्र। प्रवर्धः।
१५	२९	११	शुक्र	अनू दि	२१	२९	चं दि	१३	११	क्षयः। ● ६-४८ दिन तक। रूपभवानी जयंती। गजः।
१४	३०	१२	शनि	ज्ये दि	१९	४	पू दि	८	४०	१-१ दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ। ७-१३ दिन से गंडांत

त्रिसन्ध्याः—यह आश्चर्य जनक तीर्थ आप अवश्य देखिए और पुण्य के भागी बनें, यह यात्रा आप ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा तक करें, यहां एक कुण्ड है जिसमें साल भर पानी का अभाव होता है, विशेषतया ज्येष्ठ के मास में यहां "ब्रह्मापः" जल रूप में वह पार्वती माता प्रकट होती हैं आप देखेंगे, उस कुण्ड में जरा भी जल नहीं होगा परन्तु अकस्मात आपके देखते देखते जल का अथाह प्रवाह निकल कर नदी का रूप धारण करेगा, और उसी समय क्षणमात्र में कुण्ड पानी से खाली होगा, इस पवित्र तीर्थ पर ज्येष्ठ मास में →

सप्त ५०५२ आषाढ कृष्णपक्ष, मि. में सूर्य, शुक्र। कर्क में भौम, शनि। वृष में बुध, मेष में गुरु, केतु। तुला में राहु।

राधं	ज्ये.	जून	वार	नक्षत्र	घडी	पल	तिथि	घडी	पल	(ग्रह संचार बजे और मिटों में)
१४	३१	१३	रवि	मूल दि	१७	३१	प्र दि	५	१	१०-३५ दिन मियुन में शुक्र। ६-१२ रात मासान्त। १२-२४ दिन
१३	ह्रास	१४	सोम	पूषा दि	१७		द्वि दि	२	२०	६-१२ रात मिथुन में सूर्य मुहूर्त ४५ पहाड़ी। संक्रांति व्रत। ६-११
१२	२	१५	भौम	उषा दि	१७	४२	तृ दि	०	४६	संकट ४। मानसम्। ● प्रात: मकर में चन्द्र। उन्मूलम्।
११	३	१६	बुध	श्रव दि	१६	३६	च दि	०	३७	१-४५ रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ। छत्रम्।
१०	४	१७	वीर	धनि दि	२२	४६	पं दि	१	४१	श्रीवत्स:। तक मूल। गुरु हरगोबिन्द जन्म, मासांत। सिद्ध:।
९	५	१८	शुक्र	शत दि	२७	४	ष दि	३	५७	सौम्य:। में सूर्य (आदर आरम्भ) ४-३३ दिन से गंडांत। ★
८	६	१९	शनि	पूभा दि	३२	४०	स दि	७	१८	११-४४ दिन मीन में चन्द्र। कालदण्ड:। ★ मातंग:।
७	७	२०	रवि	उभा प्र	२	३४	अ दि	११	२९	११ बजे रात से दक्षणायन। स्थिर:।
८	८	२१	सोम	रेव प्र	९	०	न दि	१६	११	११-१५ रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त। ६-४४ रात से आर्द्र
९	९	२२	भौम	अश्वि प्र	१५	२८	द दि	२१	६	५-५४ प्रात: तक गडांत। अमृतम्।
१०	१०	२३	बुध	भर प्र	२१	२७	ए दि	२५	४७	योगिनी एकादशी। कांड:।
११	११	२४	गुरु	कृति प्र	२४	२२	द्वा दि	२९	४९	१०-४५ दिन वृष में चन्द्र। अलापक:।
१२	१२	२५	शुक्र	कृति दि	२	२०	त्रो दि	३२	५९	छत्रम्।
१२	१३	२६	शनि	रोहि दि	६	३३	चं दि	३५	२	८-४३ रात मिथुन में चन्द्र। ७-२४ शां से चन्द्रास्त। श्रीवतस:।
१३	१४	२७	रवि	मृग दि	९	३६	अ प्र	०	१६	१-२ दिन सिंह में भौम। ८-८ रात मिथुन में बुध: सौम्य:।

पार्वती माता ऐसी ही लीला करती हुई भगतों का मनोरञ्जन करती है. आपको अनन्तनाग से "डकसुम" की बस मिलेगी, रास्ते में वांगामा गांव आएगा, वहां से दो मील का मार्ग आगे चल कर यह सुन्दर तीर्थ मिलेगा।

रुद्र सन्ध्या:—यहां इस तीर्थ में जलरूप में शक्ति माता का दर्शन ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष और ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में होता है, यहां भी साल भर पानी नहीं होता, ज्येष्ठ मास में प्राय: नित्य प्रतिदिन में →

सप्त ५०५२ आषाढ शुक्लपक्ष, मिथुन में सूर्य, बुध, शुक्र। सिंह में भौम। मेष में गुरु, केतु, कर्क में शनि। तुला में राहु।

राधं	हार	जून	वार	नक्षत्र	घडी	पल	तिथि	घडी	पल
१४	१५	२८	सोम	आर्द्र दि	११	३१	प्र दि	३५	२५
१५	१६	२९	भौम	पुन दि.	१२	४	द्वि दि	३३	४१
१६	१७	३०	बुध	तिष्य दि	११	३३	तृ दि	३०	५०
१७	१८	जुला.	वीर	अश्ले दि	९	५६	च दि	२७	५९
१८	१९	२	शुक्र	मघ दि	७	३०	पं दि	२२	२०
१९	२०	३	शनि	पूफा दि	४	१८	ष दि	१७	१
१९	२१	४	रवि	उफा दि	०	४१	स दि	११	१८
२०	२२	५	सोम	चित्र प्र	१७	१६	अ द्वि	५	१४
२१	२३	६	भौम	स्वा. प्र	१३	७	द प्र	१७	४०
२२	२४	७	बुध	विशा प्र	९	२४	ए प्र	११	५८
२३	२५	८	गुरु	अनू प्र	६	११	द्वा प्र	१०	१५
२४	२६	९	शुक्र	ज्ये प्र	३	१६	त्रो प्र	२	१४
२५	२७	१०	शनि	मूल प्र	१	५१	चं दि	३३	४१
२५	२८	११	रवि	पूषा प्र	१	१.३	पूं दि	३०	५६

(ग्रह संचार बजे और मिटों में)

४-१३ रात कर्क में चन्द्र। कालदण्डः। ● अमृतम्।
चन्द्रदर्शन। स्थिरः। ☞ गंडांत २-४४ रात तक। चरः।
३-३५ रात से गंडांत। मातंगः।
३-११ दिन तक गंडांत। ९-२४ दिन सिंह में चन्द्र। बृहस्पति मास ●
कुमार ६। गुफाबल बारामूला पांजला यात्रा। काण्डः।
१२-४९ दिन कन्या में चन्द्र। अलापकः। हार ७। मैत्रम्।
विजय सप्तमी ९-५८ प्रातः तक। ७-९ शां से वृष में बृहस्पति
३-१८ दिन तुला में चन्द्र। त्र्यहः। ११-१२ रात आर्द्र समाप्त
ध्वजः। ★ हार ८ और हार नवमी शारिका जयन्ती। मुद्गरम्।
५-४३ शां वृश्चिक में चन्द्र। २-२० रात कर्क में शुक्र। देवशयनी
हरिस्वाप। लुकभवन यात्रा आनन्दः। एकादशी। प्रजापत्यः।
धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ ८-५१ रात से। ३-१५ दिन से
ज्वाला १४। ८-१५ रात तक मूल। मुसलम्। शूलम्।
व्यास पूजा। १-५४ रात मकर में चन्द्र। १-५३ दिन शनि अस्त

कई बार रुक रुक कर "गड गड" करता हुआ सुन्दर जल का प्रवाह निकलता है, और कभी प्रवाह के रूप में पानी निकल कर फिर से सन्धि करता है, यानी छुप जाता है, परन्तु कभी किसी दिन भगतों की श्रद्धा के आधार पर जलरूपी मां के दर्शन बिलकुल होते ही नहीं हैं जिस कारण से भगत जन निराश होकर वापस लौटते हैं।

यदि आप इस सुन्दर तीर्थ की यात्रा करना चाहते हैं, तो काजी गुण्ड" से जम्मू के मार्ग में लगभग पांच मील की दूरी पर →

वि० २०३३ श्रावण कृष्णपक्ष, मि. में सूर्य, बुध । सिंह में भौम । वृष में बृहस्पति । कर्क में शुक्र शनि । तुला में राहु । मेष में केतु

राष्ट्र	हार	जुला	वार	नक्षत्र		घडी	पल	तिथि		घडी	पल	(ग्रह संचार बजे और मिटों में)
२६	२९	१२	सोम	उषा	प्र	१	२८	प्र	दि	२९	१९	मृत्यु: ।
२७	३०	१३	भौम	श्रव	प्र	३	५	द्वि	दि	२८	५६	अलापक: । ● बुध । संकट ४ । मैत्रम् ।
२८	३१	१४	बुध	धनि	प्र	५	५७	तृ	दि	२९	५२	११-१७ दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ । ६-१८ शां कर्क में.
२९	३२	१५	गुरु	शत	प्र	६	५९	च	दि	३१	५८	१२-२० दिन से मासांत । वज्रम् ।
३०	श्राव	१६	शुक्र	पूभा	प्र	१५	४	पं	प्र	०	११	१२-२० दिन कर्क में सूर्य मुहूर्त ३० किनारी । संक्रांति । ७ बजे शां
३०	२	१७	शनि	उभा	प्र	२०	५५	ष	प्र	४	१६	धौम्य: । मीन चन्द्र । ध्वांक्ष: ।
३१	३	१८	रवि	रेव	प्र	२५	२	स	प्र	९	२	११-४७ रात से गंडांत । प्रवर्ध: । भातंग: ।
३२	४	१९	सोम	रेव	दि	२	१८	अ	प्र	१४	०	१-५ दिन तक गण्डांत । ६-२६ प्रात: मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त
३३	५	२०	भौम	अश्वि	दि	८	४५	न	प्र	१८	४३	अमृतम् ।
३४	६	२१	बुध	भर	दि	१४	४९	द	प्र	२२	५५	६-३ शां वृष में चन्द्र । काण्ड: ।
३५	७	२२	गुरु	कृति	दि	२०	१६	ए	प्र	२५	१०	दिन अधिक । अलापक: ।
३७	८	२३	शुक्र	रोहि	दि	२४	४४	ए	दि	०	५९	६-२१ शां शुक्र उदय । कमला ११ । ४-११ रात मिथुन में चन्द्र । ◐
३९	९	२४	शनि	मृग	दि	२८	५	द्वा	दि	३	६	वज्रम् । ◐ मैत्रम् ।
४२	१०	२५	रवि	आर्द्रा	दि	३०	१२	त्रो	दि	४	०	ध्वांक्ष: ।
४४	११	२६	सोम	पुन	दि	३१	४	चं	दि	३	३५	११-५७ दिन कर्क में चन्द्र । धौम्य: ।
४६	१२	२७	भौम	तिष्य	दि	३०	४४	अं	दि	२	०	५-१९ शां चन्द्रमा उदय । त्र्यह: । प्रवर्ध: ।

जहां सड़क पर "फारिस्ट" का क्वाटर है, उसके पास ही दांयें तरफ || एक किलोमीटर चढाई चढ़कर यह तीर्थ मिलेगा । →

सम्वत ५०५२ श्रावण शुक्लपक्ष, कर्क में सूर्य, बुध, शनि। सिंह में भौम, शुक्र। वृष में बृहस्पति।

राष्ट्रं	श्राव	जुला.	वार	नक्षत्र	घडी	पल	तिथि	घडी	पल	(ग्रह संचार बजे और मिटों में) मेष में केतु। तुला में राहु।
१२४८	१३	१८	बुध	अश्ले दि	२९	२०	द्वि प्र	२१	५	५-१४ शां सिंह में शुक्र। ५-२१ शां सिंह में चन्द्र। ११-४१ दिन से
५०	१४	२९	वीर	मघ दि	२७	१	तृ प्र	१६	३४	गजः। ● गंडांत ११-१२ रात तक। क्षयः।
५२	१५	३०	शुक्र	पूफा दि	२४	१	च प्र	११	२७	८-५५ रात कन्या में चन्द्र। सिद्धः।
५४	१६	३१	शनि	उफा दि	२०	२५	पं प्र	५	४५	९-९ दिन सिंह में बुध। शनिमास। उन्मूलम्।
५६	१७	अग	रवि	हस्त दि	१६	२९	ष दि	३३	५२	११-२६ रात तुला में चन्द्र। कुमार ६। मानसम्।
५८	१८	२	सोम	चित्र दि	१२	२०	स दि	२७	४४	तुलसीदास जयंती। मुद्गरम्।
१३०	१९	३	भौम	स्वा. दि	८	१५	अ दि	२१	४४	१२-१२ दिन वृश्चिक में चन्द्र। ध्वजः।
२	२०	४	बुध	विशा दि	४	३३	न दि	१५	५५	प्रजापत्यः। ✿ गण्डांत।पवित्रा ११ स्थिरः।
४	२१	५	गुरु	अनू दि	०	५६	द दि	१०	३८	११-१५ रात से गण्डांत। आनन्दः।
७	२२	६	शुक्र	मूल प्र	२२	१७	ए दि	५	५६	५ बजे प्रातः धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ। १०-४६ दिन तक ✿
९	२३	७	शनि	पूषा प्र	२१	१९	द्वा दि	२	७	त्र्यहः। श्रावण द्वादशी। ४-११ प्रातः तक मूल। मातंगः।
११	२४	८	रवि	उषा प्र	२१	२५	चं प्र	२३	५८	अमृतम्।
१३	२५	९	सोम	श्रव प्र	२२	४६	पू प्र	२३	३१	अमरनाथ यात्रा, रक्षाबन्धन पूर्णिमा। थजीवारा यात्रा। सिद्धः।

२०३३ का श्रावण शुक्ल पक्ष किसी भी शुभ काम के लिए निषेध नहीं है →

धर्मशास्त्र में दर्ज है, तेरह दिन वाले पक्ष में विवाह आदि शुभ काम न करें। "त्रयोदशदिने पक्षे विवाहादिन कारयेत्" पहले यह विचार कीजिए कि पक्ष कहां से आरम्भ होता है ? "प्रतिपद्य-क्षणमारम्य पञ्चदश्यन्तिमक्षण, पर्यन्तं पक्षः" प्रतिपद् के आरम्भ के समय से पूर्णिमा के अमावसी के अन्त तक पक्ष होता है→

वि० २०३३ भाद्र कृष्णपक्ष, कर्क में सूर्य, शनि। सिंह में भौम, बुध, शुक्र। वृष में बृहस्पति,

राशि	श्राव.	अग.	वार	नक्षत्र	घडी	पल	तिथि	घडी	पल	(ग्रह संचार बजे और मिटों में) तुला में राहु। मेष में केतु
१ ३१५	२६	१०	भौम	धनि प्र	२५	२४	प्र प्र	२४	२७	४-४९ दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ। उन्मूलम्।
१७	२७	११	बुध	शत प्र	२६	३४	द्वि प्र	२६	३४	दिन अधिक। शब बरात। मानसम्। ● समाप्त। चन्दन ६। भारत
१९	२८	१२	गुरु	शत दि	२	४१	द्वि दि	०	३	२-१९ रात मीन में चन्द्र। वज्रम् स्वतन्त्र दिवस। मासांत। ६-५८
२१	२९	१३	शुक्र	पूभा दि	७	३२	तृ दि	३	१३	कूर्मतृतीया। संकट ४। ध्वांक्षः। प्रातः से। ८-१७ रात तक
२३	३०	१४	शनि	उभा दि	१३	९	च दि	७	१८	नवदलयात्रा। धौम्यः। गंडांत। प्रवर्धः।
२६	३१	१५	रवि	रेव दि	१९	२३	पं दि	१२	०	२-१६ दिन कन्या में भौम। १-३७ दिन मेष में चन्द्र और पंचक ●
२८	भाद्र	१६	सोम	अश्वि दि	२५	४९	ष दि	१६	५७	११-५५ रात सिंह में सूर्य मुहूर्त १५ किनारी। ६-१७ शां शनि
३०	२	१७	भौम	भर दि	३२	१	स दि	२१	४०	१-१७ रात वृष में चन्द्र शीतला ७। गजः।
३२	३	१८	बुध	कृति प्र	४	४१	अ दि	२५	५२	जन्म अष्टमी दो। सिद्धः। उदय। संक्रांति। क्षयः।
३४	४	१९	गुरु	रोहि प्र	९	३०	न दि	२९	१४	८-२ रात कन्या में बुध। उन्मूलम्।
३६	५	२०	शुक्र	मृग प्र	१३	१४	द दि	३१	३१	११-३८ दिन मिथुन में चन्द्र। मानसम्।
३८	६	२१	शनि	आर्द्र प्र	१५	४२	ए दि	३२	३३	अजा ११। मुद्गरम्।
४०	७	२२	रवि	पुन प्र	१६	४९	द्वा दि	३२	१९	७-४२ शां कर्क में चन्द्र। गोवत्सा पूजा। ध्वज
४३	८	२३	सोम	तिष्य प्र	१६	५५	त्रो दि	३०	४८	कलियुग जन्म। प्रजापत्यः। गण्डकी यात्रा। चरः।
४५	९	२४	भौम	अश्ले प्र	१५	४९	चं दि	२८	७	१-२० रात सिंह में चन्द्र। ७-२८ रात से गंडांत। आनन्दः।
४८	१०	२५	बुध	मघ प्र	१३	४४	अं दि	२४	२६	७-८ प्रातः तक गंडांत। मघामावसी ३-४८ दिन तक। कुशामावसी

इस वर्ष श्रावण शुक्लपक्ष का प्रतिपद् २७ जुलाई को ६ बचे २४ मि० प्रातः से आरम्भ होगा और पूर्णिमा ९ अगस्त को चार बजे ३८ मि. रात समाप्त होगी। चूंकि ज्योतिष के आधार से दिन सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक माना जाता है, इसलिए २७ जुलाई →

वि० २०३३ भाद्र शुक्लपक्ष, सिंह में सूर्य। कन्या में भौम, बुध, शुक्र। वृष में बृहस्पति। कर्क में

राधं	भाद्र	अग.	वार	नक्षत्र	घडी	पल	तिथि	घडी	पल	(ग्रह संचार बजे और मिटों में) में शनि। तुला में राहु। मेष में केतु
१३ ५१	११	२६	गुरु	पूफा प्र	११	०	प्र दि	१९	५०	७-२९ प्रातः से कन्या में शुक्र। सूक्ष्मचन्द्र दिखाई देगा। स्थिरः।
५३	१२	२७	शुक्र	उफा प्र	७	३३	द्वि दि	१४	४६	रोजा आरम्भ। ५ बजे प्रातः कन्या में चन्द्र। शूलम्।
५६	१३	२८	शनि	हस्त प्र	३	४३	तृ दि	९	४	हरितालिका ३। मृत्युः। ● श्राद्ध। काम्यः।
५८	१४	२९	रवि	चित्र दि	३१	४४	च दि	३	६	त्र्यहः। ७-३६ प्रातः तुला में चन्द्र। विनायक चतुर्थी। करङ्कतीर्थं ●
१४ १	१५	३०	सोम	स्वा. दि	२७	३५	प प्र	१८	५८	चन्द्रमास। सूर्य ६। सूर्य क्षेत्र (मार्तण्ड तीर्थ यात्रा) कुमार ६। छत्रम्
३	१६	३१	भौम	विशा दि	२३	३९	स प्र	१३	१८	९-५७ दिन वृश्चिक में चन्द्र। ब्रह्मसरोवर श्राद्ध। श्रीवत्सः।
६	१७	सप्त	बुध	अनू दि	२०	६	अ प्र	८	८	गंगाष्टमी। बुधाष्टमी। सौम्यः। ★ और मूल आरम्भ। कालदण्डः।
९	१८	२	गुरु	ज्येष्ठ दि	१७	८	न प्र	३	३६	७-१६ प्रातः से गंडांत ६-४५ शां तक। १ बजे दिन धनु में चन्द्र, ★
११	१९	३	शुक्र	मूल दि	१४	५७	द दि	३१	४६	१२-९ दिन तक मूल। स्थिरः। ◐ मातंग।
१४	२०	४	शनि	पूषा दि	१३	३९	ए दि	२८	४१	५-३४ शां मकर में चन्द्र। नारायणी ११। गौतमनाग यात्रा। ◐
१६	२१	५	रवि	उषा दि	१३	२६	द्वा दि	२७	०	अमृतम् ◐ (वेरीनाग) सिद्धः।
१९	२२	६	सोम	श्रव दि	१४	२४	त्रो दि	२६	३२	१२-२० रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ। व्यथवुत्र यात्रा ◐
२१	२३	७	भौम	धनि दि	१६	३९	चं दि	२७	२३	अनन्त चतुर्दशी (अनन्तनाग यात्रा) उन्मूलम्।
२४	२४	८	बुध	शत दि	२०	८	पूं दि	२९	२८	मानसम्।

से ९ अगस्त तक गिनने पर १४ दिन आते हैं न कि १३ दिन ! १३ दिन वाला पक्ष वह कहलाएगा जब द्वितीया से चतुर्दशी तक दो दिन गुम हो। चूंकि श्रावण शुक्ल पक्ष में प्रतिपद् क्षय है→

इसीलिए श्रावण शुक्ल पक्ष १३ दिन वाला पक्ष नहीं अपितु १४ दिन वाला पक्ष है। यही कारण है कि आपकी विजयेश्वर जन्त्री में श्रावण शुक्ल पक्ष यानी २७ जुलाई से ९ अगस्त तक सभी मुहूर्त दर्ज हैं।

सप्त ५०५२ अश्विन कृष्णपक्ष, सिंह में सूर्य, कन्या में भौम, बुध, शुक्र। वृष में गुरु। कर्क में (ग्रह संचार बजे और मिंटों में) शनि। मेष में केतु। तुला में राहु।

रार्ध	भाद्र	सप्त	वार	नक्षत्र	घडी	पल	तिथि	घडी	पल	
१४ २७	२५	६	वीर	पूभा दि	२४	४२	प्र प्र	१	३२	६-४० प्रातः मीन में चन्द्र। पितृपक्षारम्भ। - मुद्गरम्।
२९	२६	१०	शुक्र	उभा दि	३०	१०	द्वि प्र	५	४३	ध्वजः। ● रात तक गण्डांत। प्रजापत्यः।
३२	२७	११	शनि	रेव प्र	५	२१	तृ प्र	१०	३७	८-४५ रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त। २-१२ दिन से ३-२७
३४	२८	१२	रवि	अश्वि प्र	११	५०	च प्र	१५	४१	संकट ४। आनन्दः।
३७	२९	१३	सोम	भर प्र	१८	१३	पं प्र	२०	५५	चरः।
४०	३०	१४	भौम	कृति प्र	२४	३	ष प्र	२५	३	८-३३ प्रातः वृष में चन्द्र। मुसलम्। ✌ आरम्भ। ७-५ शां मिथुन ★
४२	३१	१५	बुध	रोहि प्र	२८	●	स प्र	२८	३३	साहिब सप्तमी। शूलम्। ★ में चन्द्र। दिन अधिक। उन्मूलम्।
४५	आश्वि	१६	गुरु	मृग प्र	२९	३०	अ प्र	२९	३०	१२-४२ रात कन्या में सूर्य मुहूर्त ३० किनारी। मासांत। शरदृतु
४७	२	१७	शुक्र	मृग दि	३	२७	अ दि	१	३२	सक्रांतिव्रत। ६-४६ दिन सिंह होन बुध। मानसम्।
५०	३	१८	शनि	आर्द्र दि	३	८	न दि	२	३८	३-२४ रात कर्क में चन्द्र। मुद्गरम्।
५३	४	१९	रवि	पुन दि	७	३५	द दि	२	३१	१०-२६ रात तुला में शुक्र।। ध्वजः। ✗ मुसलम्।
५५	५	२०	सोम	तिष्य दि	७	४८	ए दि	१	६	त्र्यहः। ३-२१ रात से गण्डांत। प्रजापत्यः।
५८	६	२१	भौम	अश्ले दि	६	५०	द्वा प्र	२४	५७	३-४ दिन तक गंडांत। इन्द्र ११। ६-१५ दिन सिंह में चन्द्र, आनंदः
१५ ०	७	२२	बुध	मघ दि	४	५७	चं प्र	२०	३९	२-४६ रात चन्द्रास्त। १०-१० दिन से दिन रात तुल्य। चरः।
२	८	२३	गुरु	पूफा दि	२	१६	अं प्र	२०	१०	१२-५६ दिन कन्या में चन्द्र। पित्रामावसी। विजयेश्वर यात्रा। ✗

राम नवमी

रामनवमी का त्योहार अखिल भारत में मनाया जाता है, सम्भव है भारत के किसी पचांग में रामनवमी ९ अप्रेल को लिखी हो परन्तु रामनवमी मध्याह्नव्यापिनी होने से ८ अप्रेल को ही यह त्योहार मनाना शास्त्र सम्मत है।

सप्त ५०५२ आश्विन शुक्लपक्ष, कन्या में सूर्य, भौम । सिंह में बुध । वृष में बृहस्पति । तुला में

राधं	असू	सप्त.	वार	नक्षत्र	घडी	पल	तिथि	घडी	पल	(ग्रह संचार बजे और मिंटों में)
५	६	२४	शुक्र	हस्त प्र	२५	१४	प्र ५	१०	८	शुक्र,रा मेष में केतु । कर्क में शनि, । नवदुर्गारम्भ । अमृतम् ।
७	१०	२५	शनि	चित्र प्र	२१	११	द्वि प्र	४	१४	३-४६ दिन तुला में चन्द्र । चन्द्रदर्शन । काण्ड: ।
१०	११	२६	रवि	स्वा. प्र	१७	७	तृ दि	२७	५७	ईद । अलापक: । ★ दुर्गाष्टमी, महानवमी । प्रवर्ध: ।
१३	१२	२७	सोम	विशा प्र	१३	१३	च दि	२१	५९	६-६ शां वृश्चिक में चन्द्र । मैत्रम् ।
१५	१३	२८	भौम	अनू प्र	९	३९	पं दि	१६	१९	कुमार ६ । वज्रम् । ● में चन्द्र और मूल आरम्भ । ध्वांक्ष: ।
१८	१४	२९	बुध	ज्येष्ठ प्र	६	३७	ष दि	११	५	३-१९ दिन से गंडांत २-४५ रात तक । बुधमास । ६-२ रात धनु ●
२०	१५	३०	गुरु	मूल प्र	४	१७	स दि	६	३१	२-५१ दिन तुला में भौम । ८-५ रात तक मूल । धौम्य: ।
२३	१६	अक्टू	शुक्र	पूषा प्र	२	५२	अ दि	२	४५	त्र्यह:।४-२६ दिन कन्या में बुध । १-४० रात मकर में चन्द्र । ★
२६	१७	२	शनि	उषा प्र	२	३९	द प्र	२९	११	विजयादशमी । महात्मा गांधी जयंती । मजलिस असद । क्षय: ।
२८	१८	३	रवि	श्रव प्र	३	१५	ए प्र	२८	५१	१०-५ रात भौम अस्त । जया ११ । मुसलम् ।
३१	१९	४	सोम	धनि प्र	५	१८	द्वा प्र	२९	५४	७-५८ प्रात: कुम्भ चन्द्र और पंचक आरम्भ । शूलम् ।
३४	२०	५	भौम	शत प्र	८	३५	त्रो प्र	३०	७	मृत्यु: । दिन अधिक ।
३६	२१	६	बुध	पूभा प्र	१२	५९	त्रो दि	३१	१२	५ बजे शां मीन में चन्द्र । काम्य: ।
३९	२२	७	गुरु	उभा प्र	१८	१३	चं दि	४	१८	छत्रम् । ▲ गंडांत । बाल्मीकी जयती । श्रीवत्स: ।
४२	२३	८	शुक्र	रेव प्र	२४	२६	पूं दि	८	३१	३-५९ रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त । ६-१३ रात से ▲

कुम्भ का महान पर्व २०३३ में प्रयागराज इलाहाबाद में --→

समुद्र का मन्थन करने पर १४ वां रत्न जो अमृत कुम्भ वहां से निकला था उसको बांट कर लेने के निमित देवताओं और दानवों →

वि० २०३३ कार्तिककृष्णपक्ष, कन्या में सूर्य, बुध। तुला में भौम, शुक्र, राहु। वृष में बृहस्पति।

राधं	असू	अक्टू	वार	नक्षत्र		घडी	पल	तिथि		घडी	पल	(ग्रह संचार बजे और मिंटों में) कर्क में शनि, मेष में केतु
१५ ४४	२४	६	शनि	अश्वि	प्र	३०	५५	प्र	दि	१३	२४	१०-४० दिन तक गण्डांत। सौम्यः।
४७	२५	१०	रवि	भर	प्र	३१	२४	द्वि	दि	१८	३२	कालदण्डः।
४९	२६	११	सोम	भर	दि	५	४७	तृ	दि	२३	३०	३-४७ दिन वृष में चन्द्र। संकट चतुर्थी। चरः।
५२	२७	१२	भौम	कृति	दि	११	४१	च	दि	२७	५३	मुसलम्।
५५	२८	१३	बुध	रोहि	दि	१६	४८	पं	प्र	३	१७	२-३१ रात मिथुन में चन्द्र। शूलम्।
५७	२९	१४	गुरु	मृग	दि	२०	५७	ष	प्र	५	५०	२-६ दिन वृश्चिक में शुक्र। मृत्युः।
१६ ०	३०	१५	शुक्र	आर्द्र	दि	२३	५७	स	प्र	७	११	काम्यः।
३	३१	१६	शनि	पुन	द्वि	२५	३९	अ	प्र	७	१३	११-३ दिन कर्क में चन्द्र। ११-४१ दिन से मासांत। छत्रम्।
५	कत	१७	रवि	तिष्य	दि	२६	९	न	प्र	५	५८	११-४१ दिन तुला में सूर्य मुहूर्त ३० दरयाई। संक्रांतिव्रत। श्रीवत्सः
८	२	१८	सोम	अश्ले	दि	२५	२६	द	प्र	३	३	५-८ दिन सिंह में चन्द्र। ११-१४ दिन से गंडांत ११-५४ रात तक ★
११	३	१९	भौम	मघ	दि	२३	४३	ए	प्र	०	७	रमा एकादशी। कालदण्डः। ★ सौम्यः।
१३	४	२०	बुध	पूफा	दि	२१	१०	द्वा	दि	२३	२२	६-११ रात कन्या में चन्द्र। गोवत्साद्वदशी। स्थिरः।
१६	५	२१	गुरु	उफा	दि	१७	५७	त्रो	दि	१८	२१	मातंगः।
१९	६	२२	शुक्र	हस्त	दि	१४	१२	चं	दि	१२	४९	११-५८ रात से तुला में चन्द्र। महावीर १४। दीपमाला। अनर्क-चतुर्दशी। अमृतम्।
२१	७	२३	शनि	चित्र	दि	१०	११	अं	दि	६	५८	काण्डः।

में १२ दिन और १२ रात लगातार लड़ाई हुई, लड़ाई के समय में झड़पों से वह घड़ा भूलोक में चार स्थानों (१) हरिद्वार (२) इलाहाबाद (३) उज्जैन (४) नासिक (गोदावरी) में गिर पड़ा था,

सूर्य चन्द्रमा बृहस्पति ने उस कुम्भ की रक्षा की थी इसलिए इनही ग्रहों के योग से कुम्भ महान पर्व होता है। →

कुम्भ कब होता है जब बृहस्पति कुम्भ में हो और सूर्य मेष

वि० २०३३ कार्तिकशुक्लपक्ष, तुला में सूर्य, भौम, राहु। कन्या में बुध। वृष में गुरु। वृश्चिक में शुक्र। कर्क में शनि। मेष में केतु।

राधं	कत	अक्टू	वार	नक्षत्र	घडी	पल	तिथि	घडी	पल	(ग्रह संचार बजे और मिंटों में)
१६२३	८	२४	रवि	स्वा. दि	६	२	प्र दि	१	०	त्र्यहः। २-१४ रात वृश्चिक में चन्द्र। अन्नकूट। चन्द्रदर्शन। ☉
२५	९	२५	सोम	विशा दि	२	०	तृ प्र	२२	१७	१-१८ दिन तुला में बुध। मैत्रम्। ♀ अलापकः।
२८	१०	२६	भौम	ज्येष्ठ प्र	२७	५५	च प्र	१७	१७	११-२३ रात से गण्डांत। मुद्गरम्।
३०	११	२७	बुध	मूल प्र	२५	२१	पं प्र	१२	५३	५-६ प्रातः से धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ। ४-३ रात तक मूल
३२	१२	२८	गुरु	पूषा प्र	२३	३९	ष प्र	९	१८	कुमार ६, प्रजापत्यः।
३४	१३	२९	शुक्र	उषा प्र	२२	५८	स प्र	६	४२	९-१७ दिन मकर में चन्द्र। शुक्रमास। आनन्दः।
३६	१४	३०	शनि	श्रव प्र	२३	३०	अ प्र	५	१६	गोपाल ८। स्थिरः। १०-४९ दिन तक गंडांत। ध्वंज़ः।
३९	१५	३१	रवि	धनि प्र	२५	१४	न प्र	५	५	३-३५ कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ। सत्ययुग जन्म। मातंगः
४१	१६	नवं	सोम	शत प्र	२८	१८	द प्र	६	१२	अमृतम्।
४३	१७	२	भौम	पूभा प्र	३२	३०	ए प्र	८	३४	१२-२० रात मीन में चन्द्र। हरिबोधिनी ११। काण्डः।
४५	१८	३	बुध	उभा प्र	३३	३०	द्वा प्र	१२	३	शिवस्वाप। बुध १२। अलापकः।
४७	१९	४	गुरु	उभा दि	४	१०	त्रो प्र	१६	२७	४-३५ रात से गंडांत। छत्रम्।
५०	२०	५	शुक्र	रेव दि	१०	०	च प्र	२१	३३	५-५२ शां तक गंडांत। ११-१४ दिन से मेष में चन्द्र और पंचक
५२	२१	६	शनि	अश्वि दि	१६	२१	पूं प्र	२६	४९	श्री गुरु नानक जन्मोत्सव। सौम्यः। समाप्त। श्रीबत्सः।

राशि का हो उस समय हरिद्वार का कुम्भ होता है, जब बृहस्पति वृष या मेष राशि का हो और सूर्य मकर राशि में हो तो प्रयागराज इलाहाबाद का कुम्भ होता है, जब बृहस्पति सिंह राशि का हो और सूर्य मेष का हो तो उस समय उज्जैन का कुम्भ होता है, जब बृहस्पति कर्क राशि में हो सूर्य, चन्द्रमा भी कर्क राशि में हो तो गोदावरी नासिक में कुम्भ होता है, इस वर्ष २०३३ माघ अमावसी को मेष का बृहस्पति और मकर राशि का सूर्य होने से इस दिन कुम्भ का महान पर्व है। →

सप्त ५०५२ मार्ग कृष्णपक्ष, तुला में सूर्य, भौम, बुध, राहु। वृष में बृहस्पति। वृश्चिक में शुक्र

राधं	कत	नवं.	वार	नक्षत्र	घडी	पल	तिथि	घडी	पल	(ग्रह संचार बजे और मिटों में) कर्क में शनि। मेष में केतु।
१६ ५४	२२	७	रवि	भर दि	२२	४६	प्र प्र	३१	५७	११ बजे रात वृष में चन्द्र। कालदण्डः।
५६	२३	८	सोम	कृति प्र	२	४१	द्वि प्र	३३	५२	धनु में शुक्र ११-५८ दिन से। दिन अधिक। स्थिरः।
५९	२४	९	भौम	रोहि प्र	८	७	द्वि दि	२	३६	मातंगः।
१७ १	२५	१०	बुध	मृग प्र	१२	३६	तृ दि	६	१३	९-५२ दिन, मिथुन में चन्द्र। संकट ४। अमृतम्।
३	२६	११	गुरु	आर्द्र प्र	१५	५८	च दि	८	४१	२-४३ रात वृश्चिक में बुध। कांडः।
५	२७	१२	शुक्र	पुन प्र	१८	२	पं दि	९	५६	६-४२ रात कर्क में चन्द्र। ११-४४ वृश्चिक में भौम। अलापकः।
७	२८	१३	शनि	तिष्य प्र	१८	५२	ष दि	९	५८	मैत्रम्। श्री नहरू जयन्ती। वज्रम्।
१०	२९	१४	रवि	अश्ले प्र	१८	३४	स दि	८	३८	७-५ शां से गंडांत ९-५५ रात तक। १-४ रात सिंह में चन्द्र।
११	३०	१५	सोम	मघ प्र	१७	८	अ दि	६	१२	मासांत ९-२५ दिन से। ध्वांक्षः।
१४	मग	१६	भौम	पूफा प्र	१४	४९	न दि	२	४४	त्र्यहः। ९-२५ दिन वृश्चिक में सूर्य मुहूर्त ३० समुद्रीय। संक्रांति
१६	२	१७	बुध	उफा प्र	११	४७	ए प्र	२७	५७	उत्पन्ना ११। प्रवर्धः। ५-१४ रात कन्या में चन्द्र। धौम्यः।
१९	३	१८	गुरु	हस्त प्र	८	१३	द्वा प्र	२२	३५	क्षयः।
२१	४	१९	शुक्र	चित्र प्र	४	१७	त्रो प्र	१६	५२	७-५७ प्रातः तुला में चन्द्र। गजः।
२३	५	२०	शनि	स्वा. प्र	०	१२	चं प्र	११	१	९-५७ रात चन्द्रास्त। सिद्धः।
२५	६	२१	रवि	विशा दि	२१	२१	अं प्र	५	१६	१०-२५ दिन वृश्चिक में चन्द्र। उन्मूलम्।

नोटः—यद्यपि इलाहाबाद कुम्भ पर्व के लिए वृष का बृहस्पति होना आवश्यक है परन्तु मेष राशि के बृहस्पति होने के प्रमाण भी कहीं-कहीं मिलते हैं।

सप्त ५०५२ मार्ग शुक्लपक्ष, वृश्चिक में सूर्य, भौम, बुध। वृष में ब्रहस्पति। धनु में शुक्र। कर्क

राधं	मग	नवं.	वार	नक्षत्र	घडी	पल	तिथि	घडी	पल	(ग्रह संचार बजे और मिंटों में) में शनि, तुला में राहु, मेष में केतु
१७२६	७	२२	सोम	अनू दि	१७	३३	प्र दि	२४	५७	मानसम्। और मूल आरम्भ। मुद्गरम्।
२७	८	२३	भौम	ज्येष्ठ दि	१४	१०	द्वि दि	१६	५७	७-२६ प्रातः से गंडांत ६-५० रात तक। १-६ दिन धनु में चन्द्र
२८	६	२४	बुध	मूल दि	११	२७	तृ दि	१५	३६	१२-५ दिन तक मूल। ध्वज़ः।
२६	१०	२५	गुरु	पूषा दि	६	३१	च दि	१२	५	५-१० शां मकर में चन्द्र। प्रजापत्यः।
३०	११	२६	शुक्र	उषा दि	८	४४	पं दि	९	३४	कुमार षष्ठी, आनन्दः।
३१	१२	२७	शनि	श्रव दि	८	४७	ष दि	८	१४	११-११ रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ। स्थिरः।
३२	१३	२८	रवि	धनि दि	१०	६	स दि	४	६	सूर्यमास। मातंगः।
३३	१४	२६	सोम	शत दि	१२	४९	अ दि	६	२०	२-१८ दिन धनु में बुध। उरसशाह हमदान। अमृतम्।
३४	१५	३०	भौम	पूभा दि	१६	४१	न दि	११	५०	७-४७ प्रातः मीन में चन्द्र। काण्डः।
३५	१६	दसं	बुध	उभा दि	२१	३५	द दि	१५	२२	अलापकः। और पंचक समाप्त। मोक्षदा ११मैत्रम्।
३५	१७	२	गुरु	रेव प्र	२	२८	ए दि	१९	५३	११-५३ दिन से गंडांत १-३ रात तक। ६-२६ रात मेष में चन्द्र
३६	१८	३	शुक्र	अश्वि प्र	८	४६	द्वा प्र	०	१२	८-१८ रात मकर में शुक्र। ईद। वज्रम्।
३७	१९	४	शनि	भर प्र	१५	१७	त्रो प्र	५	३२	ध्वांक्षः।
३८	२०	५	रवि	कृति प्र	२१	२६	चं प्र	१०	४३	६-११ प्रातः वृष में चन्द्र। धौम्यः।
३६	२१	६	सोम	रोहि प्र	२७	३	पूं प्र	१५	१६	प्रवर्धः।

वि० २०३३ पौषकृष्णपक्ष, वृश्चिक में सूर्य, भौम । धनु में बुध । वृष में बृहस्पति । मकर में शुक्र

राष्ट्रं	मग	दसं	वार	नक्षत्र	घडी	पल	तिथि	घडी	पल	(ग्रह संचार बजे और मिटों में) कर्क में शनि । मेष में केतु । तुला में राहु ।
४०	२२	७	भौम	मृग प्र	३१	४५	प्र प्र	१८	५४	५-१६ शां मिथुन में चन्द्र मातृका पूजा । क्षयः ।
४१	२३	८	बुध	आर्द्र प्र	३५	१८	द्वि प्र	२१	२८	गजः ।
४२	२४	९	गुरु	पुन प्र	३५	२४	त प्र	२२	४२	२-२२ रात कर्क में चन्द्र । सिद्धः ।
४३	२५	१०	शुक्र	पुन दि	२	१७	च प्र	२२	४४	७-३६ शां मेष में बृहस्पति । संकट ४ । प्रलापकः ।
४३	२६	११	शनि	तिष्य दि	३	२०	पं प्र	२१	२६	२-५७ रात से गण्डांत । मैत्रम् ।
४४	२७	१२	रवि	अश्ले दि	३	१३	ष प्र	१८	५९	२-४८ दिन तक गण्डांत । ८-५३ प्रातः सिंह में चन्द्र । वज्रम् ।
४५	२८	१३	सोम	मघ दि	१	५९	स प्र	१५	२९	ध्वांक्षः । प्रजापत्यः ।
४६	२९	१४	भौम	उफा प्र	३२	२८	अ प्र	९	५२	१-९ दिन कन्या में चन्द्र । महाकाली जन्म । ९-९ रात से मासांत ।
४७	पोष	१५	बुध	हस्त प्र	२९	१	न प्र	६	११	९-१९ रात धनु में सूर्य मुहूर्त ३० दरयाई । संक्रांतिव्रत । आनंदः ।
४८	२	१६	गुरु	चित्र प्र	२५	८	द प्र	०	४५	४-१५ दिन तुला में चन्द्र । आनन्देश्वर जयन्ती । चरः ।
४९	३	१७	शुक्र	स्वा. प्र	२१	२	ए दि	१९	२४	सफला ११ । मुसलम् ।
५०	४	१८	शनि	विशा प्र	१६	५७	द्वा दि	१३	३३	६-३४ रात वृश्चिक में चन्द्र । शूलम् । मूल आरम्भ । त्र्यहः
५१	५	१९	रवि	अनू प्र	१३	५	त्रो दि	७	४८	मृत्युः । यक्षामावसी । सोमामावसी (सोमयारयात्रा) काम्यः ।
५२	६	२०	सोम	ज्येष्ठ प्र	१	३९	चं दि	२	२३	३-३४ दिन गंडांत २-५४ रात तक । ९-१३ रात धनु में चन्द्र और

को दृढ़प्रतिज्ञायें करवाने के अलावा जीवन को सुख-शान्तिमय बनाने की प्रार्थना भी की जाती है। यह यज्ञ कन्यादान से आरम्भ होकर "दयबत" पर समाप्त होता है।

दयबत क्या होता है ?

दयबत वह अन्न होता है जो बारातियों को खाना खिलाने के पश्चात् बच जाता है, ऐसा अन्न हुतशेष कहलाता है, वही अन्न "दयबत" के रूप में यज्ञ मण्डप में वधवर के लिए लाना आवश्यक →

सम्वत ५०५२ पौष शुक्लपक्ष, धनु में सूर्य बुध। वृश्चिक में भौम। मेष में हीन बृहस्पति। मकर में

रार्ध	पौष	दसं.	वार	नक्षत्र	घडी	पल	तिथि	घडी	पल	(ग्रह संचार बजे और मिंटों में) में शुक्र, कर्क में शनि,तुला में राहु।
१७५२	७	२१	भौम	मूल प्र	६	४७	प्र प्र	२८	५५	१२-२६ दिन उत्तरायण। ८-४ रात तक मूल। छत्रम्।
५१	८	२२	बुध	पूषा प्र	४	४०	द्वि प्र	२५	३१	१-२ रात मकर में चन्द्र। २-२४ रात धनु में भौम। चन्द्रदर्शन
५१	९	२३	गुरु	उषा प्र	३	२८	तृ प्र	२३	७	१३९७ महरम। सौम्यः। श्रीवत्सः।
४९	१०	२४	शुक्र	श्रव प्र	३	२२	च प्र	२१	५०	धौम्यः।
४८	११	२५	शनि	धनि प्र	४	२९	पं प्र	२१	५६	६-५४ प्रातः कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ। प्रवर्षः।
४७	१२	२६	रवि	शत प्र	६	५१	ष प्र	२३	३७	कुमार ६। क्षयः।
४७	१३	२७	सोम	पूभा प्र	१०	२६	स प्र	२५	५५	३-११ दिन मीन में चन्द्र। श्री गुरु गोविंद जन्म। गजः।
४६	१४	२८	भौम	उभा प्र	१५	७	अ प्र	२९	४०	भौममास। सिद्धः। ४-५१ दिन कुम्भ में शुक्र। उन्मूलं।
४५	१५	२९	बुध	रेव प्र	२०	४२	न प्र	३४	१८	१-४१ रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त। ७-६ रात से गंडांत
४४	१६	३०	गुरु	अश्वि प्र	२६	५५	द प्र	३५	३८	दिन अधिक। ८-१८ दिन तक गण्डांत। मानसम्।
४३	१७	३१	शुक्र	भर प्र	३३	२१	द दि	४	०	आशूरा। मुद्गरम्।
४२	१८	जन	शनि	कृति प्र	३५	२४	ए दि	९	२२	१-२४ दिन वृष में चन्द्र। पुत्रदा ११। १९७७ जनवरी। ध्वजः।
४१	१९	२	रवि	कृति दि	९	१७	द्वा दि	१४	३०	धौम्यः।
४०	२०	३	सोम	रोहि दि	९	५९	त्रो दि	१८	५८	१२-३८ रात मिथुन में चन्द्र। प्रवर्षः।
३९	२१	४	भौम	मृग दि	१४	५२	चं दि	२२	३६	विवेकानन्द जयन्ती। क्षयः।
३८	२२	५	बुध	आर्द्र दि	१८	४३	पू प्र	०	१५	गजः।

है और उसी अन्न की आहुतियां देवताओं को अग्नि में डालकर दुल्हा दुल्हन को खिलायें। उस अन्न रूपी हुतशेष को देवता प्रेम से

स्वीकार करते हैं, यदि कोई राक्षस वृति वाला मनुष्य इस महान् यज्ञ पर बरातियों को मांस खिलाता है तो आवश्यक है कि बरातियों

वि० २०३३ माघकृष्णपक्ष, धनु में सूर्य, बुध, भौम। मेष में बृहस्पति, केतु। कुम्भ में शुक्र। कर्क में शनि। तुला में राहु।

राधं	पोष	जन	वार	नक्षत्र	घडी	पल	तिथि	घडी	पल	(ग्रह संचार बजे और मिटों में)
१७३७	२३	६	गुरु	पुन दि	२१	२४	प्र प्र	१	२५	६-५४ प्रातः कर्क में चन्द्र। सिद्धः।
३६	२४	७	शुक्र	तिष्य दि	२२	४६	द्वि प्र	१	१५	उन्मूलम्। संकट ४। मानसम्।
३६	२५	८	शनि	अश्ले दि	२२	५७	तृ दि	२४	३६	१०-४४ दिन से गंडांत १०-४२ रात तक। ४-४३ दिन सिंह में चन्द्र
३५	२६	९	रवि	मघ दि	२१	५८	च दि	२२	६	मुद्गरम्।
३४	२७	१०	सोम	पूफा दि	२०	४	पं दि	१८	३२	६-२० रात कन्या में चन्द्र। ध्वजः।
३२	२८	११	भौम	उफा दि	१७	२१	ष दि	१४	१३	साहिब सप्तमी। प्रजापत्यः।
३२	२९	१२	बुध	हस्त दि	१३	५८	स दि	६	१४	१२-२३ रात तुला में चन्द्र। आनन्दः।
३१	माघ	१३	गुरु	चित्र दि	९	५८	अ दि	३	४६	मासांत। चरः। दरयाई, २-४४ रात वृश्चि० में चन्द्र। मुसलम्।
३०	२	१४	शुक्र	स्वा. दि	६	६	द प्र	२७	१४	<u>शिशर संक्रांति</u>। संक्रांतिव्रत। ५-१४ प्रातः मकर में सूर्य मुहूर्त १५
२९	३	१५	शनि	विशा दि	२	४	ए प्र	२१	२७	षठ् तिला ११। शूलम्।
२८	४	१६	रवि	ज्येष्ठ प्र	२६	२८	द्वा प्र	१६	१	११-३८ रात से गंडांत। काण्डः। गंडांत। अलापकः।
२७	५	१७	सोम	मूल प्र	२६	२७	त्रो प्र	११	१०	५-१८ प्रातः धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ। १०-५६ दिन तक
२६	६	१८	भौम	पूषा प्र	२४	७	चं प्र	६	५९	८-१० रात से चन्द्रास्त। <u>शिव चतुर्दशी दो</u>। ४-६ प्रातः तक मूल
२५	७	१९	बुध	उषा प्र	२२	४०	अं प्र	३	४१	२-३६ दिन मकर में चन्द्र। <u>द्वापुरयुग जन्म</u>। वज्रम्। मंत्रम्।

का वही बचा हुआ अन्न "दयवत" के रूप में मण्डप में लाया जाएं और पहले अग्नि में आहुतियां डाल कर फिर दुल्हा दुल्हन को खिलायें।

सप्त ५०५२ माघ शुक्लपक्ष, मकर में सूर्य। धनु में भौम, बुध। मेष में हीन बृहस्पति केतु। कुम्भ

राष्ट्र	माघ	जन.	वार	नक्षत्र		घडी	पल	तिथि		घडी	पल	(ग्रह संचार बजे और मिंटों में) में शुक्र, कर्क में शनि, तुला में राहु।
१७ २३	८	२०	गुरु	श्रव	प्र	२२	१६	प्र	प्र	१	२३	सूक्ष्मचन्द्रदर्शन। ध्वजः।
२१	९	२१	शुक्र	धनि	प्र	२३	४	द्वि	प्र	०	१५	२-३१ दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ। प्रजापत्यः।
१९	१०	२२	शनि	शत	प्र	२५	१३	तृ	प्र	०	२४	गौरी तृतीया। आनन्दः।
१६	११	२३	रवि	पूभा	प्र	२८	३०	च	प्र	१	५१	१०-३६ रात मीन में चन्द्र। त्रिपुरा ४। चरः।
१४	१२	२४	सोम	उभा	प्र	३२	५५	पं	प्र	४	३०	बसन्त पंचमी। मुसलम्। गंडांत। उन्मूलम्।
१२	१३	२५	भौम	रेव	प्र	३४	२४	ष	प्र	८	१४	२-२१ रात से गंडांत। कुमार ६। शूलम्।
१०	१४	२६	बुध	रेव	दि	३	५४	स	प्र	१२	५१	८-५६ प्रातः मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त। ३-३१ दिन तक
७	१५	२७	गुरु	अश्वि	दि	१०	४	अ	प्र	१८	४	भीष्माष्टमी। बृहस्पति मास। मानसम्।
५	१६	२८	शुक्र	भर	दि	१६	३२	न	प्र	२३	२३	८-३६ शां वृष में चन्द्र। ६-५ प्रातः मीन में शुक्र। मुद्गरम्।
३	१७	२९	शनि	कृति	दि	२२	५६	द	प्र	२८	२४	ध्वजः। प्रजापत्यः।
१	१८	३०	रवि	रोहि	प्र	२	५४	ए	प्र	३२	४६	१-२३ दिन मकर में भौम। महात्मा गांधी अन्तर्ध्यान दिवस।
१६ ५८	१९	३१	सोम	मृग	प्र	७	५९	द्वा	प्र	३३	५६	७-५६ प्रातः मियुन में चन्द्र। दिन अधिक। आनन्दः।
५६	२०	फर्व	भौम	आर्द्र	प्र	१२	४	द्वा	दि	२	१०	चरः।
५४	२१	२	बुध	पुन	प्र	१५	०	त्रो	दि	४	२८	यक्षिणी चतुर्दशी। ५-२७ शां कर्क में चन्द्र। मुसलम्।
५२	२२	३	गुरु	तिष्य	प्र	१६	३८	चं	दि	५	३३	शूलम्। दत्तात्रीय जयंती। मृत्यु।
४९	२३	४	शुक्र	अश्ले	प्र	१७	२	पूं	दि	५	१७	६-३० शां से गंडांत ६-२९ रात तक। १२-३३ रात से सिंह चन्द्र

"धर्मशास्त्रों का कहना है" → कि मांस युक्त अन्न की आहुति अग्नि में डालने से वह अग्नि श्मशान अग्नि बन जाती है और उस मण्डप को श्मशान बनाकर आशीर्वाद के रूप में पढ़े हुए वेद मन्त्र दुल्हा दुल्हन के लिए शाप →

वि० २०३३ फाल्गुणकृष्णपक्ष, मकर में सूर्य, बुध, भौम । मेष में हीन बृहस्पति, केतु । मीन में शुक्र

(ग्रह संचार बजे और मिटों में) कर्क में शनि । तुला में राहु ।

राधं	माघ	फवं	वार	नक्षत्र	घडी	पल	तिथि	घडी	पल
१६ ४७	२४	५	शनि	मघ प्र	१६	१४	प्र दि	३	४७
४५	२५	६	रवि	पूफा प्र	१४	२६	द्वि दि	१	८
४३	२६	७	सोम	उफा प्र	११	४८	च प्र	२६	३६
४०	२७	८	भौम	हस्त, प्र	८	३०	पं प्र	२१	२७
३८	२८	९	बुध	चित्र प्र	४	४५	ष प्र	१५	५२
३६	२९	१०	गुरु	स्वा. प्र	०	४०	स प्र	९	५८
३४	३०	११	शुक्र	विशा दि	२३	२३	अ प्र	४	४
३२	फाग	१२	शनि	अनू. दि	१९	९५	न दि	२५	१६
२९	२	१३	रवि	ज्येष्ठ दि	१५	४८	द दि	१९	५७
२७	३	१४	सोम	मूल दि	१२	४१	ए दि	१५	९
२५	४	१५	भौम	पूषा दि	१०	१३	द्वा दि	११	२
२३	५	१६	बुध	उषा दि	८	३८	त्रो दि	७	४९
२०	६	१७	गुरु	श्रव दि	८	५	चं दि	५	३७
१८	७	१८	शुक्र	धनि दि	८	३९	अं दि	४.	३८

१२-२८ रात मकर में बुध । काम्यः ।
त्र्यहः । छत्रम् ।
५-२१ प्रातः कन्या में चन्द्र । संकट ४ । श्रीवत्सः ।
कालदण्डः ।
सौम्यः ।
८-३० प्रातः तुला में चन्द्र । वृष में स्वचारी बृहस्पति ८-४७ दिन से
स्थिरः ।
१०-५४ दिन वृश्चिक में चन्द्र । ३-५४ दिन से मासांत । मातंगः ।
३-५४ दिन से कुम्भ में सूर्य मुहूर्त १५ समुद्रीय । संक्रांति । अमृतम् ।
७-४६ प्रातः से गंडांत ७-५ रात तक । १-२५ दिन धनु में चन्द्र और
विजया ११ । अलपाकः । १२-१० दिन तक मूल ।
४-५७ दिन मकर में चन्द्र । शिवरात्रि एक । मैत्रम् ।
शिव चतुर्दशी एक वज्रम् । मूल प्रारम्भ । काण्डः ।
१०-१८ रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ । ९-१९ दिन से
चन्द्रास्त । ध्वजः ।
प्रजापत्यः ।

बन जाते हैं । यदि आप अपनी प्यारी बेटी को सदा सुखी और सुहागन देखना चाहते हैं तो ऐसे महान् और पवित्र यज्ञ पर मांस का प्रयोग न करें ।

सम्पादक

→

सम्वत ५०५२ फाल्गुण शुक्लपक्ष, कुम्भ में सूर्य । मकर में भौम, बुध । वृष में स्वचारी बृहस्पति

	राधं	फाग	फर्वं	वार	नक्षत्र	घडी	पल	तिथि	घडी	पल	(ग्रह संचार बजे और मिंटों में) मीन में शुक्र, कर्क में शनि, तुला में राहु । मेष में केतु ।
१६	१५	८	१९	शनि	शत दि	१०	३३	प्र दि	५	२६	चन्द्रदर्शन । आनन्दः ।
	१२	९	२०	रवि	पूभा दि	१३	३९	द्वि दि	६	२९	६-६ प्रातः मीन में चन्द्र । चरः ।
	१०	१०	२१	सोम	उभा दि	१७	५४	तृ दि	९	१६	मुसलम् । 10-४५ रात तक शूलम् ।
	७	११	२२	भौम	रेव दि	२३	९	च दि	१३	८	४-१३ दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त । ९-४० प्रातः से गंडांत
	४	१२	२३	बुध	अश्वि प्र	१	१७	पं दि	१७	४८	३-५३ रात कुम्भ में बुध । कुमार ६ । मृत्युः ।
	२	१३	२४	गुरु	भर प्र	७	३८	ष दि	२१	०	३-४८ रात वृष में चन्द्र । काम्यः ।
१५	५९	१४	२५	शुक्र	कृति प्र	१४	२	स प्र	०	१८	छत्रम् ।
	५६	१५	२६	शनि	रोहि प्र	२१	४	अ प्र	५	११	तैलाष्टमी, शनिमास । श्रीवत्सः ।
	५४	१६	२७	रवि	मृग प्र	२५	२०	न प्र	९	२५	३-१३ दिन मिथुन में चन्द्र । सौम्यः ।
	५१	१७	२८	सोम	आर्द्र प्र	२९	३६	द प्र	१२	४१	कालदण्डः ।
	४८	१८	मार्च	भौम	पुन प्र	३१	३६	ए प्र	१४	४८	१-१ रात कर्क में चन्द्र । अमला ११ । स्थिरः ।
	४६	१९	२	बुध	पुन दि	१	७	द्वा प्र	१५	४१	बुध १२ । मुसलम् ।
	४३	२०	३	गुरु	तिष्य दि	३	८	त्रो प्र	१५	११	२-२० रात से गण्डांत । ईदमीलाद । शूलम् ।
	४०	२१	४	शुक्र	अश्ले दि	३	५२	चं प्र	१३	२६	८-२० दिन सिंह में चन्द्र । २-३१ दिन तक गंडांत । मृत्युः ।
	३८	२२	५	शनि	मघ दि	३	२८	पूं प्र	१०	३३	होली । काम्यः ।

दीपमाला

दीपमाला कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्दशी २२ अक्तूबर शुक्रवार को होगी, दीपमाला के विषय में आप नोट कीजिए, कि जब चतुर्दशी और अमावसी दोनों "दिवा" हैं तो निश्चित करके दीपमाला चतु-→

वि० २०३३ चैत्र कृष्णपक्ष, कुम्भ में सूर्य,बुध, मकर में भौम । वृष में वृहस्पति । मीन में शुक्र ।

राधं	फाग	मार्त्वं	वार	नक्षत्र	घडी	पल	तिथि	घडी	पल	(ग्रह संचार बजे और मिंटों में) कर्क में शनि, तुला में राहु, मेष में केतु
१५ ३५	२३	६	रवि	पूफा दि	१	५८	अ प्र	६	४१	१-२० दिन कन्या में चन्द्र । छत्रम् ।
३२	२४	७	सोम	हस्त प्र	२७	३७	द्वि प्र	२	३	वज्रम् ।
३०	२५	८	भौम	चित्र प्र	२४	२	तृ दि	२५	४६	४-३८ दिन तुला में चन्द्र । संकटचतुर्थी । ध्वांक्ष: ।
२७	२६	९	बुध	स्वा. प्र	१६	५६	च दि	२०	१६	धौम्य: । रात मकर में चन्द्र । संक्राति । उन्मूलम् ।
२४	२७	१०	गुरु	विशा प्र	१५	४५	प दि	१४	२७	७-३ रात वृश्चिक में चन्द्र । ४-४६ दिन कुम्भ में भौम । प्रवर्ध: ।
२२	२८	११	शुक्र	अनू प्र	११	३८	ष दि	८	३५	क्षय: । त्र्यह: । ६-३० रात धनु में चन्द्र, मूल आरम्भ । गज : ।
१६	२९	१२	शनि	ज्येष्ठ प्र	७	४६	स दि	३	४६	३-५३ दिन से गण्डांत ३-६ रात तक । ११-५६ दिन मीन में बुध
१६	३०	१३	रवि	मूल प्र	४	२९	न प्र	२३	८	११-१४ दिन से मासांत । ८-११ रात तक मूल । थालबरुन।सिद्ध:।
१४	चैत्र	१४	सोम	पूषा प्र	१	४६	द प्र	१८	५३	११-१४ दिन मीन में सूर्य मुहूर्त ३० । दरयाई । सोंत । १२-५३
११	२	१५	भौम	उषा दि	२९	३३	ए प्र	१५	३२	पापमोचनी ११ । मानसम् ।
८	३	१६	बुध	श्रव दि	२८	४५	द्वा प्र	१३	११	छत्रम् । को दिन रात तुल्य । जनकपुर यात्रा । कालदण्ड: ।
६	४	१७	गुरु	धनि दि	२९	४	त्रो प्र	१२	७	६-३ प्रात: कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ । श्रीवत्स: ।
३	५	१८	शुक्र	शत प्र	०	४४	चं प्र	१२	१८	११-२३ रात चन्द्रास्त । चैत्र १४ । सौम्य: ।
१	६	१९	शनि	पूभा प्र	३	२८	अ प्र	१३	४७	१-३५ मीन में चन्द्र । विचारनाग यात्रा । नवरोज़ । ५-४१ रात

दर्शी को ही होगी, इस विषय में शास्त्रकारों में कोई मतभेद नहीं है, यदि किसी पंचांग में चतुर्दशी "दिवा" होने पर भी अमावसी को दीपमाला दर्ज हो तो यह बात उनकी धर्मशास्त्र की अनभिज्ञता का प्रमाण है ।

रखिये ऐसा उपाय करने से आगे आने वाले क्रूर ग्रह भी शान्त होंगे और आप के हर काम की सफलता में सहायक होंगे।

फर्वरी - इस मास में पदवी में वृद्धि, समाज में प्रसिद्धि तथा मान प्रतिष्ठा बढ़े, दसवां भौम आप की प्रतिष्ठा में सहायक होगा, रात दिन डटकर परिश्रम कीजिये, इस मास में ग्रह आपके अनुकूल हैं वे हर काम में आप के सहायक होंगे, अच्छे अच्छे पुरुषों से मिलाप होगा।

मार्च—इस मास में लाभ और आमदनी में इस कदर वृद्धि होगी कि यह महीना एक स्मारक रहेगा, जबकि गोचर से वृष राशि का स्वामी शुक्र, मीन राशि का स्वामी बृहस्पति वृष राशि में दूसरे और बारवें भाग में ठहरे हैं. आप इस मास के महत्व को नष्ट न करें, प्रभु को याद रख कर दिल व जान से परिश्रम कीजिये और फिर देखिये कि यह भविष्यवाणी कहां तक पूरी उतरती है, "कर्म कुरु" काम करो।

वृष राशि का वर्षफल

यह वर्ष गत वर्ष की अपेक्षा मध्यम रहेगा, जिस काम में आप का हाथ होगा, उस काम में सफलता होगी, परन्तु उलझनों का मुकाबला भी साथ साथ करना होगा, वर्ष भर घरेलू वातावरण अशान्त रहने से मानसिक अशान्ति बनी रहेगी, शरीर सुख इस वर्ष उत्तम रहेगा, परन्तु धन की स्थिति स्थिर रहेगी, बृहस्पति और केतु बारवें घर में ४ जुलाई तक टिके रहेंगे, दूसरा भौम खर्च के भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है यह योग आर्थिक संकट का सूचक है. आमदनी में कमी रहेगी और खर्च की भरमार रहेगी, नये नये खर्च की योजानायें सामने आती रहेंगी, सामूहिक रूप से यह वर्ष आमदनी की दृष्टि से कमजोर परन्तु खर्च की दृष्टि से बलवान् रहेगा, शनि भी तीसरे घर का आप के खर्च के भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है, जिस के प्रभाव से धन का बहुत सा भाग निरर्थ खर्च होगा, शुक्र गोचर से चूंकि दसवां है नौकरी पेशा होने पर नौकरी में तर्की देने में सहायक होगा, विशेषतया आप के मान और शान में जरा भी आंच नहीं आने देगा बल्कि शुक्र देवता रक्षा करेंगे, धन की तंगी होने पर भी धन प्राप्ति के ऐसे साधन बनते रहेंगी जो आप के खर्च को पूरा करते रहेंगे, वृष राशि वालों की प्रतिष्ठा की दृष्टि से यह वर्ष बहुत उत्तम रहेगा, अच्छे अच्छे पुरुषों की संगति में बैठने का अवसर मिलेगा, शुभ तथा प्रसिद्ध त्योहारों में सम्मिलित होने की प्रवृत्ति में वृद्धि होगी, तामीरी कामों की ओर प्रवृत्ति बढ़ेगी और धन की कमी होने पर भी तामीरी

कामों को अमली शकल मिलेगी, ग्रहों को दृष्टि में रख कर विश्वास रखिये कि कोई भी शत्रु आप का सामना न कर सके गा, यानि आप को गोचर से इस वर्ष शत्रुनाशक योग है, भाई बन्धुओं से प्रेम व्यवहार करने में वृद्धि होगी, धार्मिक कामों की ओर भी प्रवृत्ति रहे गी, शरीर के विषय में इस वर्ष आप निश्चिन्त रहें, यदि आप स्वास्थ्य से ठीक हैं तो आप इस वर्ष अपने शरीर में नया बल और नया तेज पायें गे, यदि आप के शरीर में कोई तकलीफ है तो साधारण सी औषधि का सेवन करने से ही आप का स्वास्थ्य ठीक होगा, परन्तु जब आप दुर्गासप्तशती के ११वें अध्याय के २८वें श्लोक "रोगानशेषान-पहंसि" का दवाई सेवन करते समय उच्चारण करेंगे, ऐसे तो इस वर्ष सामूहिक रूप से आपका स्वास्थ्य ठीक रहे गा परन्तु ८ नवम्बर से ३ दमम्बर तक शरीर के बिषय में सावधान रहिये, क्यों कि इन दिनो में शरीर कष्ट अथवा अकस्मात् चोट का भय है, इस वर्ष हर मास के अन्तिम दो दिन आप के लिये हानिकारक हैं जिसका उपाय यह है कि आप अपने जन्म दिन पर "बहुरूप गर्भ के दस पाठ करें या करवायें।

विद्यार्थियों के लिये यह वर्ष हर दृष्टि से सुस्त रहेगा, यदि आप अपनी सफलता चाहते हैं तो कटिबद्ध रहकर पढ़ाई में लगे रहें, जरा भर की भी लापरवाही आप की असफलता का कारण बने गी, जिन विद्यार्थियों का जन्म दिन इस वर्ष शनिवार या मंगलवार को आये वह विद्यार्थी इस वर्ष किसी पलंग या चारपाई पर न सोयें और ब्राह्मी मुहूर्त में उठ कर पढ़ने का परोग्राम बनायें, निश्चय रखिये इस उपाय से आप को अवश्य सफलता होगी। जिनविद्यार्थियों का जन्मदिन इस वर्ष वृहस्-पतिवार अथवा बुधवार को आता हो वह वर्ष भर मास खाना तर्क करें, बुजर्गों का आदर करें, नित्यप्रति माता के चरणों का स्पर्श करें, मेरे इस लिखे उपाय पर अमल करने से आप को आशा से अधिक सफलता होगी, जिन विद्यार्थियों का जन्मदिन सोमवार या रविवार को आता हो उन के लिये आवश्यक है कि वे सिगरेट आदि नशीले वस्तुओं का प्रयोग न करें, इस उपाय से ही आप पास होने की आशा रखें। नहीं तो बाद में पछताना होगा। (नोट — जन्मवार जन्मपत्री में देखें)

वृष राशि का मासिक फलादेश

अप्रेल — यह मास हर दृष्टि से सुख शान्ति का होगा, घरेलू हालात अनुकूल होंगे, आमदनी में वृद्धि होगी, खर्च में यथाक्रम अधिकता होगी, खर्च प्राय: अच्छे कामों पर ही होगा, इस मास की जुफत तारीखें आप के लिये विशेषतय: लाभदायक रहेंगी, आप इस मास में अपने पाठ के साथ "ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं उमा दुर्गा